विश्व का सर्वाधिक पढ़ा जाने वाला अखबार

दैनिक जागरण

मुजफ्फरपुर, 2 सितंबर 2013

गुजरात में लहराएगी शाही लीची

आठ किस्म के पौधे भेजने की कवायद, मुशहरी लीची अनुसंधान केन्द्र ने की पहल

उमाशंकर, मुशहरी (मुजफ्फरपुर)

देशवासियों के दिल पर राज करने वाली मुजफ्फरपुर की शाही लीची अब गुजरात में लहराएगी। गुजरात की माटी पर लीची के पौधे लगाने की कवायद में लीची अनुसंधान केन्द्र जुट गया है। 8 किस्मों के लीची पौधों को सीआइएएच के क्षेत्रीय कार्यालय गोधरा भेजा जा रहा है।

वातावरण व माटी अनुकूल

गुजरात के मिट्टी एंव वातावरण के अनुकूल है। इसलिए वहां लीची के उत्पादन की संभावना तलाशी जा रही है। इसमें शाही, चाइना, बेदाना, लोगिया, कसवा, लेटवे दाना, अझौली एवं ग्रीन किस्म के 20-20 पौधे गोधरा के सेन्ट्रल इंस्टीच्यूट ऑफ एरिड हार्टिकल्चर भेजने की तैयारी है। सबकुछ अनुकूल रहा तो पौधे की संख्या बढ़ाई जाएगी। एनआरसी के वैज्ञानिक भी भेजे जाएंगे जिससे वहां के किसान भी आत्मनिर्भर हो सकेंगे। इन दोनों ने वहां के नवसारी एवं जामनगर में संभावनाओं का तलाश भी किया था। उनके आने के बाद जो प्रतिवेदन मिला उससे स्पष्ट हो गया कि वहां लीची की बागवानी

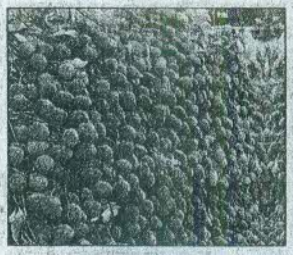

सफलता पूर्वक हो सकेगी।

देश की हर जगह से डिमांड

इससे पहले रांची से पांच हजार पौधा वहां भेजा गया था जिसका परिणाम अच्छा मिला। वहीं एक माह पूर्व केरल राज्य के वायवाड में भी पांच हजार लीची पौधे भेजे गए थे। वहां लीची का उत्पादन दिसम्बर माह में होता है। इसके अतिरिक्त राजस्थान के उदयपुर, मणिपुर, उत्तर प्रदेश में भी लीची की बागवानी बड़े पैमाने पर की जा रही है। मध्यप्रदेश के सतना से भी लीची पौधों की मांग की गई है। सभी रिसर्च सेंटर से डाटा मांगा गया है।

बोले केन्द्र निदेशक

लीची अनुसंधान केन्द्र के निदेशक डा.विशालनाथ ने कहा कि पूर्व में केन्द्र के प्रधान वैज्ञानिक डा.राजेश कुमार एवं डा. विनोद कुमार ने गुजरात जाकर मुआयना भी किया है। देश के हर राज्य में लीची बाग के विस्तार की योजना पर काम चल रहा है।

खरीफ में भी होगी प्याज की खेती

अनिल कुमार, ढोली (मुज.)

राज्य में प्याज की खेती जल्द ही खरीफ मौसम में प्रारंभ होगी। तिरहुत कृषि महाविद्यालय ढोली में इसे लेकर अनुसंधान चल रहा है। प्रारंभिक अनुसंधान से पता चला है कि सूबे में खरीफ प्याज की खेती भी अपार संभावनाएं हैं। इसका विशेष फायदा होगा कि कृषक बरसात से रबी मौसम तक इसका उत्पादन कर बाहर से आने वाले महंगे प्याज से बच सकते हैं। अगर अनुसंधान सफल रहा तो यह प्याज की खेती के क्षेत्र में बड़ी क्रांति साबित होगी और लोगों को आसानी से कम मूल्य में प्याज मिल सकेगा। इसकी खेती के लिए सामान्यत: रबी प्याज की जैसी ही

करते हैं। सिर्फ यह ध्यान रखना होगा की रबी प्याज में मेड़ तो खरीफ प्याज में नालियों के सहारे सकी पटवन करते हैं। 15-18 किलो प्रति हेक्टेयर बीज की जरूरत होती है।

उपयुक्त जलवायु

75 से 100 मिलीमीटर वर्षा, तापमान 20 से 25 डिग्री के आसपास।

उपयुक्त प्रभेद

एन 53 है।

खाद एवं उर्वरक

200 से 250 ग्राम, कम्पोस्ट/नाइट्रोजन 120 ग्राम, फॉस्फोरस 125-150 ग्राम, सल्फर 30 से 40 किलो प्रति हेक्टेयर देना चाहिए।

उद्यान विभागाध्यक्ष सह सब्जी वैज्ञानिक डा. एलएम यादव कहते हैं कि यदि अनुसंधान सफल रहा तो यहां के लोगों को पूरे वर्ष प्याज सस्ती कीमत पर उपलब्ध हो सकेगा।